गणपतिविषयक आर्षदृष्टि

डॉ. अर्चना सिंह*

ब्रह्मणस्पते स्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः।।[1]

शतपथब्राह्मणके भाष्यकार हरिस्वामीके गुरु स्कन्दस्वामी, जो संवत् 687 में विद्यमान थे, अपने ऋग्वेद–भाष्य के प्रारम्भ में लिखते हैं–

विघ्नेश विधिमार्तण्डचन्द्रेन्द्रोपेन्द्रवन्दित।
नमो गणपते तुभ्यं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते।।

इससे स्पष्ट है कि वैदिक देवता ब्रह्मणस्पति ही विघ्नेश गणपति हैं। लौकिक साहित्य में गणेश के दो मुख्य गुण वर्णित हैं (1)– एक विद्या, बुद्धि एवं धन का प्रदान और दूसरा विघ्न या दुष्टों का दमन। वेद में ब्रह्मणस्पति के सम्बन्ध में ऐसे ही उल्लेख मिलते हैं। यथा–

न तमंहो न दुरितं कुतश्चन नारातयस्तितिरुर्न द्वयाविनः।
विश्वा इदमस्माद् ध्वरसो वि बाध से यं सुगोपा रक्षसि ब्रह्मणस्पते।।[2]

'हे ब्रह्मणस्पति! आप जिस जनकी रक्षा करते हैं, उसे कोई दुःख और तज्जनक पाप पीड़ित नहीं कर सकता; शत्रु कहीं भी उसकी हिंसा नहीं कर सकते, मन में कुछ और तथा क्रिया में कुछ अन्य करने वाले वंचक भी उसे बाधा नहीं दे पाते। अपने जनों की हिंसक समस्त सेनाओं को आप नष्ट कर देते हैं।'

तद्देवानां देवत माय कर्त्वमश्नथ्नन् हलहाऽत्रदन्त वीलिता।
उद् गा आजदभिनद् ब्रह्मणा वलमगूहत्तमा व्यचक्षयत्स्वः।।[3]

'देवों में श्रेष्ठ देव ब्रह्मणस्पति के ये कर्म हैं––दृढ़ पर्वतादिकों को ये अपने बल से विशीर्ण कर देते हैं, कठोर को कोमल बना देते हैं, प्रकाश या ज्ञान प्रदान करते हैं, अज्ञान या अन्धकार को दूर करते हैं एवं स्वर्गात्मक सुख प्रदान करते हैं।'

ब्रह्मणस्पति, बृहस्पति और वाचस्पति (2)––वेद में ये एक ही गणपति के भिन्न नाम मिलते हैं। भास्कर राय ने 'गणपति–सहस्त्र नाम' के 'खद्योत' नामक भाष्य में लिखा है कि 'शिव विष्णु, देवीविषयक उपनिषदों के सदृश गणपति सम्बन्धी उपनिषदें भी देखी जाती हैं। तीनों वेदों में 'गणानां त्वा गणपतिं'––

यह मंत्र पढ़ा गया है, अतः कर्मकाण्ड में भी गणपति की स्वीकृति स्पष्ट है'–

*एसो० प्रो०–संस्कृत विभाग ए० डी० सी०, प्रयागराज

'शिवविष्णुदेवीविषयकाणामिवृ गणपतिविषयाणा–मुपनिषदामपि जागरूकत्वाच्च। कर्मकाण्डेऽपि अभ्यातानामत्र कदर्थनमपेक्ष्य स्पष्टतरस्य 'गणानां त्वा' इति मन्त्रस्य वेदत्रयेऽपि पठ्यमानस्य शरणीकर्तुं युक्तत्वाच्चेति दिक्।

ऋग्वेद में गणपति–सम्बन्धी अधोलिखित मन्त्र आता है––

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।**(3)**
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः श्रृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्।।[4]

––(4)'ब्रह्म अर्थात् अन्न अथवा उत्तम कर्मों के रक्षक, देवादि गणों के गणपति, क्रान्तदर्षियों में श्रेष्ठ कवि, ज्येष्ठराज, मन्त्रों के स्वामी मैं तुम्हारा आवाहन करता हूँ। हमारी स्तुतियों को सुनते हुए रक्षार्थ हमारे यज्ञ में आप उपस्थित हों।'

लोक में गणेष को देवी के तेज से उत्पन्न––गौरीतेजोभूः–
(गणेशपुराण, गणेशसहस्त्रनाम 46। 24) और 'आदिदेव' कहा जाता है। ऋग्वेद की उक्ति है ––

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानों महो ज्योतिषः परमे व्योमन्।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमांसि।।[5]

'बृहती वाक् अथवा संसार के स्वामी बृहस्पति, परमव्योम–रूप महाशक्ति के महान् तेज से सर्वप्रथम उत्पन्न होकर सात–(5)

छन्दरूप मुखवाले और सात किरणों अथवा सात वर्ण–वर्ग वाले गणपति विविध रूप धारण करके नाद के द्वारा अन्धकार अथवा अज्ञान को दूर करते हैं।' (6)

गणेश को 'एकदन्त' कहा जाता है। ऋग्वेद में एक मन्त्र आता है––

चत्तो इतश्चत्तामुतः सर्वा भ्रूणान्यारुषी।
अराय्यं ब्रह्मणस्पते तीक्ष्णश्रृंगोदृषन्निहि।।[6]

'वह अलक्ष्मी इस लोक से तथा उस लोक से भी विनष्ट हो जाय, जो समस्त भ्रूणों या ओषधियों के अंकुरों को नष्ट कर देती है। हे तीक्ष्णदन्त ब्रह्मणस्पति! आप उस दान विरोधिनी अलक्ष्मी या दुर्भिक्षाधिदेवता को दूर करते हुए जायँ।'

'श्रृंग' का अर्थ दाँत भी होता है। सायणाचार्य ने 'तीक्ष्ण–तेजस्क' ऐसा अर्थ किया है।

लोक में गणेश और सरस्वती की एक साथ वन्दना भी देखी जाती है। वेदों में भी ऐसा उल्लेख मिलता है––

'प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता'।। (ऋग्वेद 1। 40। 3; सामवेद, आग्नेयपर्व 2। 56; यजुर्वेद 33। 89)

'हमारे यज्ञ में ब्रह्मणस्पति देव आवें, वाग्देवता सरस्वती भी पधारें।'

ब्रह्मणस्पति ऋग्वेदमें महत्वपूर्ण देवाता के रूप में वर्णित है। ग्यारह सूक्तों में इनकी स्तुति मिलती है। पुराणों में आकर इनका रूप और विशद हुआ है। प्रत्येक लेखनकार्य या अन्य शुभ कर्म में वे अग्रणी रहते हैं। बालकों के अक्षरारम्भ में वे स्मृत होते हैं। जो लोग सोचते हैं कि गणेश जी का लेखन–कार्य से सम्बन्ध 'सिद्धि' शब्द के गड़बड़–झाले के कारण हुआ है, वे भ्रान्त है। उनका यह कहना कि 'सिद्धि' शब्द प्राचीनकाल से ही वर्णमाला का बोधक रहा है और गणेश को 'सिद्धिदाता' कहा जाता है, अतः उक्त शब्द ही गणेश को लेखक के रूप में वर्णन करने वाले उपाख्यान का जन्मदाता है–– असंगत है।

पतंजलि ने 'सिद्ध' शब्द को मंगलार्थक और नित्यार्थक माना है। 'कातन्त्र–व्याकरण' का पहला सूत्र है––'**सिद्धो वर्णसमाम्नायः।**' इसका अर्थ है–– 'वर्णमाला नित्य है।' '**ऊँ नमः सिद्धम्**' इसका भी प्रयोग यत्र–तत्र मिलता है। इसमें पठित तीनों शब्द मंगलार्थक एवं परमात्मवाचक हैं। 'तैत्तिरीयसंहिता' के सुप्रसिद्ध भाष्यकार कौशिक भट्टभास्कर ने रुद्रभाष्य में लिखा है––(7)

'**ऊँ, स्वाहा, स्वधा, वषट्, नमः इति पंच ब्रह्मणो नामापि।**' '**मंगलार्थम्**'––सिद्ध–शब्द मंगलार्थक है। महाभाष्य के इस प्रतीक को लेकर भर्तृहरि लिखते हैं––

''**निरपकृष्टाभिमतार्थसिद्धिर्मंगलम्। तदर्थं च यदुपादीयते तदपि तदर्थत्वान्मंगलमित्याख्यायते।** (8)––बिना किसी त्रुटि के अभिप्रेत अर्थ की सिद्धि को 'मंगल' कहते हैं और मंगलार्थ जिस शब्द का ग्रहण किया जाता है, वह भी तदर्थ होने के कारण 'मंगल' कहलाता है।'' इस प्रकार सिद्ध–शब्द का अर्थ मंगलमूर्ति या गणपति तो हो सकता है, वर्णमाला का बोधक नहीं। वैदिक बृहस्पति ही लौकिक गणेश हैं। वेद में गणपति और इन्द्र की एकता के भी वचन मिलते हैं। यथा––

नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्।
न ऋते स्वत् कियते किं चनारे महामर्कं मध्वञ्चित्रमर्च।। [7]

'हे गणपति! मनुष्य गणों में आप जागरूक होकर अपस्थित हों। विज्ञों का कहना है कि तुम लेखकगणों अथवा कल्पकों की प्रज्ञा या लेखन–सामर्थ्य हो। अरे! तुम्हारे बिना कोई कार्य नहीं किया जा सकता। अतः हे मघवन्! आप महान् श्रेष्ठ और विविध कर्म (जनों के हृदय में उपस्थित होकर) करें।'

वस्तुतः गणपति का अर्थ है––(9)'अक्षर' गणके पालक।' यही ब्रह्मणस्पति का भी अर्थ है। यास्क 'निरुक्त' में लिखते हैं––'**ब्रह्मणस्पतिः––ब्रह्मणः पाता वा पालयिता वा।**' दुर्गाचार्य ने इसपर लिखा है––'ब्रह्म' का अर्थ अन्न और ऋगादि वेद हैं। वर्षा के द्वारा ओषधियों का निष्पादन करते हुए यह दोनों का रक्षक बन जाता है।' 'ब्रह्म' को वेद कहते हैं। वेद त्रिधा विभक्त हैं––ओंकारात्मक, वर्णमालात्मक और संहितात्मक। भर्तृहरि कहते हैं––'**प्रणवो हि वेद', स हि सर्वशब्दार्थप्रकृतिः।** ––प्रणव ही वेद है, वही समग्र शब्दों और अर्थों का मूल है।' पतंजलि की उक्ति है––'**सोऽयमक्षरसमाम्नायो वेदितव्यो ब्रह्मराशिः।** 'महाभाष्य'––वर्णमाला ब्रह्मराशि है।'

'ब्रह्म' का अर्थ स्तुति या मन्त्र भी होता है। गणपति मन्त्रों के उद्भावक हैं। इन्हें अग्नि का ही एक रूप माना जाता है। मनुस्मृति के टीकाकार मेधातिथि भी इसी मत को मानते हैं। वेद में ओंकार और लोक में स्वास्तिक का या श्रीगणेशः का लेखन–स्मरण प्रसिद्ध है। 'गणेशपुराण' का कथन है––

ओंकाररूपी भगवान् यो वेदादौ प्रतिष्ठितः।
यं सदा मुनयो देवाः स्मरन्तीन्द्रादयो हृदि।।
ओंकाररूपी भगवानुक्तस्तु गणनायकः।
यथा सर्वेषु कर्मसु पूज्यतेऽसौ विनायकः।।

शुक्लयजुर्वेद, अध्याय (23।19) में गणपति से सम्बद्ध अधोलिखित बहुचर्चित मन्त्र आता है––

'**गणानां त्वा गणपतिं' हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्मधमा त्वमजासि गर्भधम्।**'

इसका वास्तविक अर्थ निम्नांकित है–– यजमान और यजमान पत्नी प्रातः ब्रह्मणस्पति या सूर्य की स्तुति करते हुए कहते है––

'हे मेरे जीवनरक्षक सर्वव्यापी ईश्वर (मम वसो) मनुष्यादि गणों मे गणपति हम आपका आह्वान करते हैं। प्रियों में प्रियपति हम आपका आह्वाहन करते हैं। तुम समस्त स्थावर जंगमात्मक प्रजारूप गर्भ 'प्रजा वै पशवो गर्मः' (श० ब्र० 13।2।8) का पोषण करने वाले हो (त्वं गर्मधम् आ अजासि)। मैं भी प्रजारूप गर्भ का पोषक पालक हो जाऊँ (अहं गर्भधम् आ अजानि)।'

शुक्लयजुःसंहिता में भी वाचस्पति, बृहस्पति और ब्रह्मणस्पति सम्बन्धी अनेक कण्डिकाएँ मिलती हैं। तीनों की एकता भी भाष्यकारों ने प्रतिपादित की है। बृहस्पति या ब्रह्मणस्पति समस्त देवों में श्रेष्ठ, अनके पुरोहित अर्थात् अगण्य हैं––

'**त्रयो देवा एकादश त्रयस्त्रिँ शाः सुराधसः। बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।**[8]

'त्रिगुण एकादश अर्थात् तैंतीस सुसम्पन्न देव, जिनमें बृहस्पति अग्रगण्य हैं, सविता या परमात्माकी आज्ञा में वर्तमान होकर अन्य देवों के साथ हमारी रक्षा करें।'

'**रक्षा णो ब्रह्मणस्पते।**'[9]

'हे ब्रह्मणस्पति! हमारी रक्षा करो।'

अथर्ववेद में एक स्थानपर जातवेदस् ब्रह्मणस्पति से प्रार्थना की गयी है कि 'बच्चे के दो दाँत, जो पिता–माता को व्याघ्र के समान मारने के लिये उद्यत हैं, आप उन्हें कल्याणकारक बना दें।'

यौ व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च।
तौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः।।[10]

(अथर्ववेद 6। 140। 1)

'अन्यत्र विविध प्रकार के राक्षसों के नाश की भी प्रार्थना की गयी है––

'येषां यश्चात्प्रपदानि पुरः पार्ष्णीः पुरोमुखा। खलजाः शकधूमजा उरुण्डा ये च मट्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः। तानस्या ब्रह्मणस्पते प्रतीबोधेन नाशय।।'[11]

बृहस्पति या गणपति को वेदों में 'देवपुरोहित' कहा गया है। पुरोहित अग्निस्वरूप ही होता है। इसमें पाँच विघ्न कारक शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं। एक वाणी में, एक पैरों में, एक त्वचा में, एक हृदय में तथा एक उपस्थेन्द्रिय में। कुपित अग्निरूप पुरोहित राजा का निग्रह करता है और शान्त होने पर अनुग्रह। सूनृतावाक् के द्वारा यजमान पुरोहित की वाणी में स्थित विघ्न को शान्त करता है, पादोदक से पैरों के विघ्न को। अलंकरों से त्वचा में विद्यमान, तर्पण से हृदय में स्थित और अनारुद्ध सुन्दर गृहप्रदान करके उपस्थ के विघ्न को शान्त करता है। इस प्रकार शान्त हुआ अग्निरूप पुरोहित जैसे समुद्रभूमि को सुरक्षित रखता है, वैसे राजा का कल्याण करता है।

'अग्निर्वा एव वैश्वानरः पंचमेनिर्यत् पुरोहितः, तस्य वाच्येवैका मेनिर्भवति पादयोरेका त्वच्चे का हृदय एकोपस्थ एका[12] ....।'

'बृहस्पतिर्ह वै देवानां पुरोहितः।–– बृहस्पति या अग्नि स्वरूप गणपति देवों के पुरोहित हैं।' वे अशान्ततनु होकर कोई विघ्न न करें, अतः पंचोपचारपूजनद्वारा हम उन्हें शान्ततनु बनावें––

'स एनं शान्ततनुरभिहुतोऽभिप्रीतः स्वर्गलोकमभिवहति क्षत्रं च बलं च राष्ट्रं च विशं च।' (ऐतरेय ब्राह्मण)

संदर्भ

1. (क) विद्यावारिधि, बुद्धि विधाता–––तुलसीदास
(ख) शुण्डाग्रकलितेन हेमकलशेनावर्जितेन क्षर– न्ना
नारत्नचयेन साधकजनाम् सम्भावयन् कोटिशः।

–––श्री राघव चैतन्य–––महागणपतिस्तोत्र 8
(ग) विघ्नध्वान्तनिवारणैकतरणिर्विघ्नाटवीहव्यवाट्।
(घ) यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः
सम्पदों भक्तसंतोषिकाः स्युः।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः
सदा तं गणेशं नमामो भजामः।।
––गणेशपुराण, उपासनाखण्ड, गणेशाष्टक 5

2. 'बृहस्पते ब्रह्मणस्ते'–––तै० ब्रा० 3/11/4/2, 'एष (प्राणः) उ एव ब्रह्मणस्पतिः। वाग्वै ब्रह्म तस्या एष पतिः तस्मादु ह ब्रह्मणस्पतिः' ––शतपथ ब्राह्मण 14/ 4/1/23, 'एष वै ब्रह्मणस्पतिर्य एव (सूर्यः) तपति' ––शतपथब्राह्मण 14/1/2/15 'बृहस्पतिरेव ब्रह्मणस्पतिः' ––उवट। According to Maxmuller, बृहः and ब्रह्मणः are derived from the some root बृह् to speak; So बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति and वाचस्पति mean the same god. 'Lord of Prayer'-Griffith, Root बृह् (शब्दें) मनिन्; तस्य पतिः षष्ठ्याः पति० अष्टाध्यायी 8/3/53 इति विसर्गस्य सः। or from the root- बृह् वृद्धौ–––द्र० टि०, सामवेद, आग्नेयपर्व 2 /56/

3.(क) 'गणेश सहस्त्रनाम' 14–15 में भी लिखा है––
कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मणस्पतिः।।
ज्येष्ठराजो निधिपतिः निधिप्रियपतिप्रियः।
खद्योतभाष्य–कार्यत्वात्काव्यकर्तृत्वात्कविरेष तथा कविम्।
कवीनामुपमश्रुत्या कवीनामृषभोऽप्ययम्।। 55।।
ब्रह्मण्यो ब्राह्मणे वेदे साधुस्तपसि धातरि।
वाग्वै ब्रह्म पतिस्तस्या इत्येष ब्रह्मणस्पतिः।। 56।।
ज्येष्ठराजाइति ख्यातो ज्येष्ठाख्ये साम्नि राजनात्।
एष नाम्ना निधिपतिर्निधीनां परिपालनात्।। 57।।
'निधीनां त्वा निधिपतिं हवामह' इति श्रुतेः।
निधिप्रिया ये पतयो राजराजादयो नृपाः ।। 58।।
तैरप्युपास्य इत्येय निधिप्रियपतिप्रियः।

(ख) गणेश पु० उ० 1। 5 में भी आता है––
'गणानां त्वा गणनाथं सुरेन्द्रं कविं कवीनाम्।'

4. 'आदि' शब्द से 'अक्षरगणके रक्षक'––यह अर्थ भी लेना चाहिये। एलिस गेटी (Alice Getty) नामक विदेशी महिला ने अपनी 'गणेश' नामक पुस्तक के पहले अध्याय में लिख है––

'Prabhodh Chandra Begehi suggest that Ganesa was associated with writing because of a confusion in regard to the word 'Siddhi'. From very ancient times, the Hindu alphabet was called 'Siddham' and the enumeration of the alphabet began with the word 'Siddhi'. As one of the epithets of Ganes'a is 'सिद्विदाता–– giver of Success', he believes it to be probable that his association with the word gave rise to the legends depicting him as a scribe.'

5. शैवी चित्–शक्ति ही 'परमव्योम' के नाम से प्रसिद्ध है––

मन्त्राश्छन्दांसि यज्ञाः कतव इति परव्योम्न एवास्य जन्म,
स्त्रष्टृत्वं केवलं च प्रथयति तदधिष्ठातुरेणांकमौलेः।। (आनन्दलहरी 12)

'श्वेताश्वतर–उपनिषद्' का 'छन्दांसि यज्ञाः कतवः। (4। 1)

यह मन्त्र' 'परमव्योमसे ही इस जगत् का जन्म होता है और उस परमव्योम या चिदाकाशके अधिष्ठाता शशांकमौलि भगवान् शंकर ही एकमात्र इसके स्रष्टा हैं'––यह स्पष्ट करता है।

'ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्' इति तत्पूर्वमन्त्रप्रकृतां परमव्योम–शब्दितां शैवीं शक्ति परामृश्य पञ्चम्यास्तस्याः समस्तजगदुपादानत्वप्रतिपादनात्'––(आनन्दलहरीचन्द्रिका)

6. सप्तरश्मिः––अ, क, च, ट, त, प, य–– यही सात रश्मियाँ या वर्ण हैं, जिनसे अज्ञान दूर होता है––

टकारादिक्षपर्यन्ता कलास्ताः शब्दकारणम्।
मातरः शक्तयो देव्यो रश्मयश्च कलाः स्मृताः।। (भट्टभास्कर)

7. 'नित्य–पर्यायवाची सिद्धं शब्द.'। 'मंगलार्थम्' मांगलिक आचार्यों महतः शास्त्रौघस्य मंगलार्थं सिद्धशब्दमादितः प्रयुङ्क्ते।' (पश्प्शाहिक)

8. भण्डारकर को भी इस सम्बन्ध में भ्रम हुआ। हाँ, गोपीनाथ राव ने अवश्य बृहस्पति और गणेश की एकता का प्रतिपादन अपने 'एलिमेंट्स आफ हिंदू आइक्रोनोग्राफी' नामक ग्रन्थ के Vol. I, Part I, P. 45 में किया है–– 'Bhandarkar is of the opinion that this reputation for wisdom was born of a confusion between Ganes'a and the Vedic god of wisdom, Brihaspati, while Rao identifies him with the celestial Guru Brihaspati himself. It is interesting to note here that Brihaspati, an important god in the Rigveda is described as carrying the axe or 'golden hatchet', an attribute particularly a scribed to Ganes'a, and that he also was referred to as Ganapati'- 'गणेश' [Alice Getty.]

9- Coomarswamy attributes his reputation as 'Patron of Letter's

to the double meaning of the word, Gana, which , besides being the name of the followers of Siva, is also the 'technical designation of early lists or collections of related works. ['गणेश' in 'Bulletin of the Boston Museum of Fine arts'. Vol. XXVI, P. 30, April 1928. ('गणेश' Alice Getty)]

संदर्भ सूची :–

1. ऋग्वेद 2। 23। 19; 2। 24, 16; यजुर्वेद 34। 58
2. ऋग्वेद, 2। 23। 5
3. ऋग्वेद 2। 24। 3
4. ऋग्वेद 2 । 23। 1
5. ऋग्वेद, 4 । 50 । 4
6. ऋग्वेद, 10। 155। 2
7. ऋग्वेद 10। 112। 9
8. यजुर्वेद, 20। 11
9. यजुर्वेद, 3। 30
10. अथर्ववेद, 6। 140। 1
11. अथर्व०, 8। 6। 15
12. ऐतरेयब्राह्मण' 8 पल्लिका, अभ्या०

****